हिक्स के व्यापार-चक्र का सिद्धांत

(The Hicksian Theory of Trade Cycle)

प्रो० हिक्स (J.R Hicks) ने 1950 ई० मे प्रकाशित अपनी पुस्तक - "A contribution to the Theory of Trade cycle" मे व्यापार-चक्र का अपना अलग सिद्धान्त प्रतिपादित किया है जिसे व्यापार चक्र का आधुनिक सिद्धान्त भी कहते हैं। लेकिन हिक्स के सिद्धांत को पूर्णतः मौलिक नही कहा जा सकता, क्योंकि अपने सिद्धांत के प्रतिपादन मे उन्होने दूसरो के सिद्धांतो से मदद ली है। प्रो० हिक्स के व्यापार-चक्र के सिद्धांत के निम्नलिखित तीन स्रोत है :-

(1) सर्वप्रथम हिक्स ने केन्स (Keynes) से बचत एवं विनियोग प्रक्रिया (Saving and Investment Mechanism) तथा गुणक-सिद्धांत (Multiplier Theory) को अपनाया। लेकिन हिक्स ने पूँजी की सिमान्त क्षमता (Marginal Efficiency of capital) तथा ब्याज की दर (Rate of interest) को उतना अधिक महत्त्व नही दिया जितना केन्स ने दिया था। हिक्स का कहना है कि केन्स ने विनियोग-प्रक्रिया की ब्याज-लोच (Interest-elasticity of Investment Function) को जरूरत से ज्यादा महत्त्व दिया था। केन्स के अतिरिक्त हिक्स कैम्ब्रिज के अन्य लेखकों, जैसे मार्शल (Marshall) पीगू (Pigou) एवं कान (Kahn) के भी आभारी है।

(2) हिक्स के सिद्धांत का दूसरा स्रोत त्वरक सिद्धांत (Accelerator Theory) है जिसके प्रतिपादको मे प्रो० क्लार्क (J.M Clark) तथा रैगनर फ्रिश (Ragnar Frisch) के नाम प्रमुख है। गतिशील सिद्धांत (Dynamic Theory) के लिए हिक्स कालेस्की तथा सैम्युलसन (Samuelson) के भी आभारी है।

(3) हिक्स ने हैरोड (Harrod) से भी प्रेरणा ली है। हैरोड की पुस्तक "Towards A Dynamic Economics" से हिक्स ने इस विचार को अपनाया कि व्यापार-चक्र प्रगतिशील अर्थव्यवस्था मे ही उत्पन्न हो सकते है गतिहीन अर्थव्यवस्था मे नही। हैरोड के अनुसार एक प्रगतिशील अर्थव्यवस्था मे व्यापार चक्र स्थायी संतुलन (Static Equilibrium) से अलगाव (departure) नही परन्तु गतिशील संतुलन (Moving Equilibrium) से अलगाव है। प्रो० हिक्स का भी प्रायः यही विचार है। हिक्स हैरोड के प्रति इसलिए भी आभारी है क्योंकि हैरोड ने कहा था कि आर्थिक स्थायित्व (Economic stability) रोजगार

की तुलना मे उत्पादन (output) पर अधिक निर्भर करता है।

प्रो० हिक्स के अनुसार चक्रीय उथल-पुथल गुणक Multiplier एवं त्वरक (Accelerator) की मिलित क्रियाओं के कारण उत्पन्न होते है। (cyclic fluctuation can be attributed to the combined effects of multiplier action and the principle of acceleration) हिक्स के अनुसार विनियोग दो प्रकार के होते है:- (i) स्वतः विनियोग (Autonomous investment) तथा (ii) प्रेरित विनियोग (induced investment) स्वतः विनियोग वह विनियोग है जो उत्पादन की मात्रा मे परिवर्तनो से स्वतंत्र होता है। (Autonomous investment consists of those types of investments which are independent of changes in output) स्वतः विनियोग एक निश्चित दर पर बढ़ता रहता है जिससे अर्थव्यवस्था प्रगतिशील संतुलन की स्थिति मे रहती है यदि इसके संतुलन के पथ मे कोई रुकावट उत्पन्न न हो। दूसरी ओर प्रेरित विनियोग वह विनियोग है जो उत्पादन की मात्रा मे परिवर्तनो के द्वारा प्रेरित होता है। (induced investment consists of those types of investments which are induced by changes in output) उत्पादन की मात्रा मे वृद्धि के फलस्वरूप इस प्रकार के विनियोग को जो प्रोत्साहन मिलता है वह वास्तव मे त्वरक का सिद्धांत (Principle of Acceleration) है। हिक्स के अनुसार विनियोग की मात्रा एवं मौद्रिक आय स्तर (Level of Money income) मे घनिष्ठ सम्बन्ध होता है और वास्तव मे विनियोग की मात्रा मौद्रिक आय पर निर्भर करती है। पुनः स्वतः विनियोग की मात्रा के अनुसार मौद्रिक आय का एक निश्चित स्तर होता है और आय तथा विनियोग का यह अनुपात गुणक एवं त्वरक के सिद्धांत का निर्णायक होता है जिनसे व्यापार-चक्र की सृष्टि होती है।

प्रो० हिक्स ने कुछ मान्यताओं (assumption) के आधार पर अपने सिद्धान्त की व्याख्या की है। ये मान्यताएँ निम्नलिखित है:-

(1) हिक्स ने प्रगतिशील अर्थव्यवस्था (Progressive Economy) की मान्यता स्वीकार की है जिसमे स्वतः विनियोग (Autonomous Investment) मे निरंतर दर (Regular Rate) से वृद्धि होती है ताकि अर्थव्यवस्था मे प्रगतिशील संतुलन (Progressive Equilibrium) बना रहे।

(2) बचत एवं विनियोग के तत्व ऐसे है कि यदि वे एक बार संतुलन पथ (Equilibrium path) से दूर हट जाते है तो बाद मे वे संतुलन से और दूर चले जाते है।

(3) पूर्ण रोजगार की सीमा (celling) पर उत्पादन मे लगाये जाने वाले साधनो (Employable Resoures) की कमी के कारण उच्चतर प्रसार (Upward Expansion) मे एक प्रत्यक्ष रुकावट आती है। दूसरे शब्दो मे पूर्ण रोजगार के स्तर से आगे उत्पादन मे वृद्धि करना असंभव है।

(4) लेकिन संकुचन (contraction) के लिए इस प्रकार की कोई रुकावट नही होती। फिर भी त्वरक की प्रक्रिया (working of the Accelerator) निम्न ढलान (Downward) मे उच्च उछाल (upward swing) से भिन्न होती है जिससे निम्न ढलान मे अप्रत्यक्ष रूप से रुकावट आती है।

(5) व्यापार-चक्र की विभिन्न अवस्थाओ मे गुणक एवं त्वरक के मान स्थिर (Fixed values) रहते है। दूसरे शब्दो मे उपभोग प्रक्रिया (consumption function) तथा विनियोग प्रक्रिया (investment Function) दोनो स्थिर (constant) रहती है।

Scanned with CamScanner